

क्रामण्यायनमः ।। समाविभावणमासिमाद्रपर्रे व्याप् छी उत्मपष्टी संस्कार तर्याह लुपछी न तेन ध्यामत्त्रवंध्यादिमन् मनासनामिनी मिदीचि यपत्रियो मादिमताने प्राप्यमिया स्तालामध्य रसम्पर्युक्तां समिन्यान्त्या प्रितितिष्यप्रां भाषातः प्रवासितीपचक्तामय व सास्छात्र र गमस्यादिकाः महस्य साम्यमा इत्य मान्यपद्मान्यवाह मसोभाषा देश मुक्त पचनाय मानिसंपा यत थान ररी भारवाप की माना रवा के मास वंका ग्रस्तवं जनानी स्वर्थाः प्रतिमापु नासाम मा च संपाद्य मध्यान स्वात्वाधातन स्त्रान्द्रता प्रमाणमारणा निचार वास नीतिवास निवा पर स्वाप्त नी भिर्पत्रा सामप्राच्या प्रमासमार प्रत्यात सब हरी सारवारी नारे वेण के लासमा ता रत नवस्त्रणावेष्टपतद्य भनाती रान्दर प्रातिमा स्छापय व एका क्रणे स्छापन क्योत् इस्ति लात्त दभाव स्त्रियाक्तिम् म्यस्याक्तियात्वात्याते नासह प्राक्तियात्वात्वात् प्रतिभाति। तुर्त्र सं केल्पः । सम्म्यवध्यः या हिममहजनमित्र जन्मातर सं व ध्याका के मं ध्याम्हतव्ध्याप् दाषप्राहण हा एदी घोषः भी विष्ण की ति बत प्रमेषा मध मभाषानिय समामिश्रास्य थे आ स्या हरू मध्या भवानी स्वर्भ स्था वा र सा Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वंचारष्ठांकरिष्य ।।गणपातिष्रजनगरिकत्रमाराध्यनं तंस्त्वाप्राणप्रतिष्ठं कुमोत्।अध्या नंगकर्र गारं के हणान तार संसार्वारंभ ने में द्रारं ।। सद्ख्यंते हृद्यार विद्यान वा नी मित्रितं मामि। भी भवानी में क ए म्यां ने में गामा छवे वह ने राम संदूर्ग कि लिए या। पूजियाति विधानन प्रसन्तः सुमु विभान । आवाहना। पारासने कु हु प्रात्ति र्म में खर्ण ति भिराष्ट्र तिविविचे स्टेर कुर विषाद् ना मने ।। आसरे। आत कंत्रित्व देनम्यात्रार्थनयाहतं ।। तायमे तस्य खस्य अपाधार्थन्ति । हिता। पाछ।। मधार्कतपुष्पणचर्ननम्युगायना। अध्येष्टशणद्वेन्यभित्रम्यच सां कि हा अपयोगहत्त मा चमती यं सं मका विश्वेष्वर प्र प्राग्य हा णपर मञ्जान ते छ अवसमायने ।। जा-विमनीय।। ने मास्तु सर्वकानद्वा या माद रार्धधारिका। मध्यप र्समयादते यहाणपरमान्वरामध्यम् अपने अपयासान्यमहादेवसर्वन्यापनम् तात्र गारतियतं नियतं नाचत्रसंको भवसर्वदाग्ययस्तानगद्दशाचे वसहादेवस्तप महाहद्र हतप्रवित्रयते मया।। यहाणात्र द्रयादत्तं तब तुष्ट्य धी मन-वाण्टत्।। एम

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigitib.org

इदं मध्यमधार्नात्वस्तानार्धमेव नाग्टहाणदेवदेव द्वात ते न्यात्रिय यष्टम् ।। मध्या सत्या रेवर ने या समय मियत मया गत्त सम्बद्धा समापन्तः प्रयन्त्राभन सर्व ता गर्मिया चंदाकियाः समानीत हमाभारह नामितं।स्नाताय तमयण तथा तीरस्नी क्रियतां विमा।।। उद्यहिनस्यान। उत्तमने राभवनः।। वस्त्रस्त्रभद्कल्यदेशनामाष् दर्तमं ॥गरशाम्यम् मानातस्वस्य समामन्गवस्य ग्यापनातस्य वे भे समा अमित प्राण्या युध्य भवन चे खिह प्रचीत एहाण मि ॥ प्रज्ञापनी ते। गहाण नाता मरणाजने सामामहे सामान्य नद निर्मितानि । ते ते हैं के निर्मित विश्व से निर्मित वहा क्षां यतिमाने पाति। अस्ति। अस्वितं वर्ते व वत्यान्वत्यान्वत्यान्वत्यान्वत्यान्वत्यान्वत्यान्वत्यान्वत्यान्वत्य वत्रेष्ठरत्रेष्ठगद्रगणपरत्रेभवर्गगरंगाअस्तान्धवतान् सुद्रान्त्रत्र्गायुर्ति । स्त्राक्राण्याम्यामया युभ्यसम्भिताक्राज्यसम्ब्राज्याक्रिया हेकाः सोभाग्यसु खं संपद्या अतस्वा श्रज विष्या त्रियह गावरमान्य गाप्ति देवा कं क्रमंकार्म मंदियं माम्माभाम सभावायुक्क मना वित्र देवी गरहाछ परम Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ग राणपरमञ्चरि।कञ्चलं।विमाधनार्थन्यं संचयस्यप्रश्यतं के कतिकामयेषा करेड में के किम जारणां थे यह राण ते हें आ जा विश्व मातः गर्भ कि ति की करें डे च प क स्तर्या यो अपयो यो भी गार्थ ते मयोह ताः।। तानाप रिमल द्रे व्यं गराणपर में स्वर्ण परिमान द्र याणि। किपया रवदेवन्त्र तर्वेत्रीत्यथ मेव-च।। एहाणतुस्य प्रध्याण प्रयात्रीतातिभाम् देशपुष्पाणा। अवयागपुता। त्रिवायतमः ॥पादो हे द्याता गु त्याः मारा मधा मिरापतयः मानुनीः महन्या उसः सर्भत्या गुर्धः विष्यंत्रका०कि छि मामेश्वरा० नार्मि० प्रमुपतया उदर् ज्यो पर्वे हर्ति हुये। वामद्वां ना हु नी त महा कि महाद्वा भ्याव मं वका ने में ने चे प्रा खाया करता देन गणधारा भर व उमामहम्बराभ्यानमः संबंधिन ॥ देख त्रिगुणाकारं गावनस्पातरसाक्ततो गधार्यः सुमनो हरः ॥आ त्रयः सर्वहेया माध्याप्रमायप्रमाराध्या। ध्रम्। साज्यात्रमात्रसंयुक्तवान्त्रमाया। हो वंग राणदेन रा में श्राम्या मिरायहा। हो वं ॥ पाय सा प्रपं का नं सं वीपस्त रमंय तेंग ने बयं यहाता है न के पार्क समय आया ने वे या गा गाई केस मानी व एम

हमकं अनिर्मिलं ॥ एलाक प्रवृद्य प्राध्य प्राध्य प्राध्य प्राध्य पानी ये ॥ उत्तरा पान्य नाथ ने आनी तमात्र सनमागर हाण च मुमान्ति सन कुः खान नार ना। उत्तरापाराना । हसा प्रशास्त्रा स्वापार स्वापार नाम स्वापार स्वापार स्वापार स्वापार स्वापार स्वापार स्वापार स्व नलसमन्।। एहाणाचं दतंसाम कराइतंनहत्वणकर इतेन। केष्ठ रला तवणाहिष्या कल समन्वत।।तान्ति मान्यतभागार ताण्या माक्लगर्द पल भाति फलगाहर ज्या मातर विणागा दी पाव लिसमाय क्तं भवानीस्मिति की न्वना भागित्यस गढणा वं मम श्रानप्रता पवा ।।नीरा ज्यमानुष्यां मात्रणहाना द्वामान्त्रभाद्यका दिपिः।। उद्योगमास्त दे न प्रयथमधा धिया पुष्पे परिणाया तिनानी तिपद विगणा न साम वां विस्तपाक्षनी (५ महन महरम्ते ।।। जनभाय नमस्य समार हार्था धार जा। त्रिश्तिधारिन तुभ्यभूतामापत्र सम्मान मस्माराम्। अस

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

धात्रारणं आवाहने नजा वस्य का सार दिन प्रमाणिया नती ब्राह्मण प्रमाने सुवासिनी प्रमाने वायन दाने हे लें। संगोनित हिने दल लेहिं। भी भी प्रमाने के स्वार्थ के में नी यात्र में की यात्र में की

り万万